SHRI P. J. KURIEN: Sir, that is totally the jurisdiction of the I&B Ministry. The hon. Member may put the question to the I&B Ministry.

MR. CHAIRMAN: The allotment is according to the I&B Ministry.

श्री भूपेन्द्र सिंह मान: सभापति जी, सारा देश इस बात से चिंतित है कि यहां कागज की कमी है। मंत्री जी ने अभी कहा कि कागज फारेस्ट बेस्ड मैटीरियल से नहीं बनाने दिया जाए इसके लिए हम सोचते हैं।

श्री सभापति: वुड बेस्ड।

श्री भूपेन्द्र सिंह मान: फारेस्ट बेस्ड। ... (**व्यवधान**)

श्री सभापति: पत्तियों का बनाओ तो कोई एतराज नहीं है।

श्री भूपेन्द्र सिंह मान: लेकिन पंजाब में युकलिप्टस एक क्राप के तौर पर किसानों ने ली और सरकार ने कहा कि युकलिप्टस लगाओ और उसके अच्छी तरह से आपको दाम मिलेंगे, उससे पेपर बनेगा, वगैरह-वगैरह, इस वक्त पंजाब के किसान पैनिक कटिंग कर रहे है फारेस्ट की जो उनका अपना है, उनकी क्राप है और सरकार उनको अपने फारेस्ट से, अपनी क्राप से पेपर बनाने की इजाजत न दे जबकि सारे देश में इस वक्त यह है कि कोई भी अपनी चीज को प्रोसैस कर सकता है, तो क्या मंत्री जी यह बताने की कोशिश करेंगे कि पंजाब के किसानों के साथ जो उनकी अपनी क्राप हैं उसको पेपर बनाने, चाहे वह किसी भाग में, चाहे को आपरेटिव में आए या कंपनी में आए किसी भी तौर पर आए, क्या उनको पेपर बनाने की इजाजत होगी? उसके साथ ही क्या यह पैनिक कटिंग जो हो रही है उसको रोकने के लिए कुछ जल्दी उपाय किए जायेंगे?

MR. CHAIRMAN: The question is about eucalyptus grown by Punjab cultivators.

SHRI P. J. KURIEN: We have already given letter of intent for manufacture of paper in Punjab. That has already been sanctioned. With regard to the cutting of the forest, that is the jurisdiction of the Punjab Government.

MR. CHAIRMAN: Next Question.

एफ० एम० बैंड में मराठी कार्यक्रम

*383. **डा० बापू कालदाते**: क्या सूचना और प्रसारण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि आकाशवाणी के मुंबई केन्द्र से एफ० एम० बैंड पर मराठी कार्यक्रम हफ्ते में सिर्फ आध घंटे के लिए प्रसारित होते हैं;

(ख) यदि हां, तो इन कार्यक्रमों को इतने कम समय के लिये सीमित करने का क्या कारण है;

(ग) क्या सरकार इस बैंड के कार्यक्रमों के प्रसारण का समय बढ़ाने पर विचार कर रही है; और

(घ) यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है?

सूचना और प्रसारण मंत्रालय में उपमंत्री (कुमारी गिरिजा व्यास): (क) जी, नहीं। आकाशवाणी, बम्बई के एफ० एम० चैनल से प्रसारित मराठी संगीत कार्यक्रम की कुल अवधि 2 घंटे 10 मिनट प्रति सप्ताह है।

(ख) यह सवाल पैदा ही नहीं होता।

(ग) जी, नहीं ।

(घ) यह सवाल पैदा ही नहीं होता।

डा० बापू कालदाते : सभापति जी, यह जो एफ० एम० बैंड है यह अति उच्च फ्रीक्वेंसी का बैंड है और यह एक नई सुविधा इस देश में उपलब्ध हुई है । इसकी मांग बढ़ती जा रही है क्योंकि कल खुद मैंने एफ०एम० बैंड पर क्रिकेट मैच सुना और मुझे लगा कि यह अन्य बैंड से बहुत अच्छा बैंड है। इसमें कोई डिस्टर्बेंस नहीं होता है, नोइज का इंटर-फिरेंस भी नहीं होता है और आवाज भी सफाई से सुनायी देती है। हम स्पष्ट तौर पर सारी बातें सुन सकते हैं इसलिए इसकी मांग बढ़ती जाएगी ।

तो मेरा पहला सवाल यह है कि क्या सरकार ने एफ० एम० बैंड बढ़ाने के बारे में कोई एक परस्पेक्टिव अपनी आठवीं पचवर्षीय योजना में सामने रखा है ? आज कितने बैंड्स हैं, कितनी जगहों पर और कितने स्टेशनों पर यह सुविधा उपलब्ध है और इसे बढ़ाने की दृष्टि से सरकार क्या कर रही है ? इसमें से महाराष्ट्र में सिर्फ बंबई में लग रहा है, बाकी कोई नहीं है । तो मैं मंत्रीजी से पूछना चाहता हूं कि आनेवाली आठवीं पंचवर्षीय योजना में महाराष्ट्र में और कितनी अधिक जगहों में एफ0एम0 बैंड की सुविधायें उपलब्ध हो जायेंगी ? यह मेरा पहला सवाल है।

कु० गिरिजा व्यास : माननीय सभापति जी, माननीय सदस्य महोदय ने जो मूल प्रश्न पूछा था, यह उससे अलग हटकर प्रश्न पूछा है । यह बहुत विस्तृत प्रश्न है । मैं चाहूंगी कि आप इस संबंध में अलग नोटिस दे दें ।

श्री वोरेन जे० शाह : यह तो इसी से निकलता है और उसके साथ ही इसका जवाब दिया जाना चाहिए ।

MR. CHAIRMAN: You Can... (*Interruptions*)...

मंत्रीजी उत्तर दे रहे हैं।..(**व्यवधान**)...

SHRI AJIT KUMAR PANJA: To add to my....(*Interruptions*)...

कु० गिरिजा व्यास : माननीय सभापति महोदय, माननीय सदस्य महोदय ने ठीक कहा कि एफ०एम० बैंड की मांग भी बढ़ती जा रही है। एफ०एम० की फ्रीक्वेंसी भी बहुत अच्छी है और इसे बढ़ना चाहिए। इसलिए सातवीं पंचवर्षीय योजना से ही यह निर्णय लिया गया कि नए जो स्टेशंस होंगे वह अधिकतर एफ०एम० बैंड से ही होंगे और नए जितने भी स्टेशंस खोले जा रहे हैं, चाहे वे लोकल हों या रीजनल हों, मुख्य रूप स वह एफ०एम० बैंड के हैं। जहां तक बंबई का प्रश्न है, चार महानगरों में एफ0एम० बैंड के सेपरेट चैनल दिए गए हैं जहां पर कि केवल संगीत का कार्यक्रम अभी शुरू किया गया है।

श्री सभापति : वह पूछ रहे हैं कि महाराष्ट्र के जो और रेडियो स्टेशंस हैं, वहां एफ० एम० बैंड देंगे ?

कु० गिरिजा व्यास : जो नए खुलेंगे उसमें हम एफ० एम० बैंड ही देंगे।

SHRI AJIT KUMAR PANJA: Sir, just to add one thing, FM band is good and we have taken it up not only in the Seventh Plan, but also in the Eighth Plan we are going to increase it, as the honourable Member has rightly pointed out. But the difficulty is this: When FM band comes into operation, the existing radio sets will be of no use, they would not have any market value and cannot be sold even for a paisa. Therefore, people in most of the areas which are in financial difficulties will be in difficulty for changing from the existing bands to FM band. The price of an FM band radio set is higher than that of an ordinary set. Therefore, honourable Members will appreciate that in our country we have to go very slowly. Otherwise we will increase the population coverage as far as FM band is concerned, but people should have the purchasing power to buy new radio sets. Even in Maharashtra a study has been made all over. Therefore,

we are taking it but going in a slow manner to see that more FM band radio sets are produced and the price comes down to the level of the purchasing power of the people. That is the reason why we are going slowly but steadily, to win the race.

क्योंकि मैं मानता हूं कि भाषा शिक्षा, संस्कृति और सभ्यता का वाहक है और हरेक राज्य की अपनी सभ्यता और संस्कृति है, जिसको बढ़ाने के लिए अगर हम इस मीडिया का उपयोग नहीं करेंगे तो और दूसरी कोई मीडिया हो नहीं सकती। इसके लिए मैं आपसे यह जानना चाहता हूं, हम सब लोगों को यह कम समय लगता है, क्या सरकार इस समय को बढ़ाने के लिए कोई कदम उठाने वाली है या नहीं? अगर उठाने वाली है तो इसको उठाने का प्रयास कब से शुरू होगा? इतना मुझे बताइए।

कु० गिरिजा व्यास: माननीय सभापति जी, पहली बात तो एफ०एम० बैंड पर साढ़े चार घंटे का कार्यक्रम आता है साढ़े छह बजे शाम से ग्यारह बजे तक। दूसरी बात बंबई शहर में चार चैनल हैं—ए, बी, एफएम और विविध भारती। "बी" चैनल पूरी तरह से जो 16 घंटे प्रति दिन देता है, सोलह के सोलह घंटे मराठी के होते हैं प्रति दिन के हिसाब से। जहां तक विविध-भारती का प्रश्न है, एक घंटे चालीस मिनट विविध भारती मराठी में कार्यक्रम देती है। उसके अतिरिक्त एफएम से, जैसे मैंने कहा, सप्ताह में दो घंटे दस मिनट का कार्यक्रम होता है। मैं समझती हूं, इतना कार्यक्रम मराठी के लिए पर्याप्त है।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: श्रीमान्, मैं पूछना यह चाहूंगा कि क्या जो इनकी शक्ति है रेडियो की, वह हमारी सीमाओं तक अच्छी तरह पहुंच रही है? और, जो हमारी सेना के जवान हैं, इन जवानों के लिए विभिन्न भाषाओं में, जो भाषायें हर प्रदेश का बोलने वाला है, क्या ध्यान यह गया है कि जो सेना में विभिन्न भाषायें हैं, उनके एण्टरटेनमेंट के लिए सेना के हित को देखते हुए प्रोग्राम किए जाते हैं? और, किए जाते हैं तो कब किए जाते हैं?

कु० गिरिजा व्यास: माननीय सभापति महोदय, सेना और बोर्डर एरिया को विशेष ध्यान में रखकर कार्यक्रम दिए जाते हैं। अभी 127 स्टेशन जो आल इंडिया रेडियो के हैं, उसमें 24 भाषा और 146 डायलेक्ट को सम्मिलित किया गया है, जिसमें निश्चित रूप से बोर्डर एरिया में रहने वाले हमारे सैनिकों को उससे प्रोग्राम मिलता है। समय उनका अलग-अलग है। सुबह से शाम तक वे विभिन्न समयों में अपने कार्यक्रम प्राप्त करते हैं।

श्री सभापति: आपकी बात खत्म हो गई। वह कर रहे हैं।

डा० बापू कालदाते: सभापति महोदय, दूसरा प्रश्न पहले प्रश्न से उत्पन्न हुआ है। अब ये सही सवाल मैं पूछ रहा हूं।

श्री सभापति: सैकंड सप्लीमेंटरी?

DR. BAPU KALDATE: I am asking only the second supplementary, not more than that.

इसमें ए, बी, सी, कुछ नहीं है। सवाल का जवाब जो आपने दिया है, उसमें कहा है कि क्योंकि बंबई आकाशवाणी से शाम तीन घन्टे का कार्यक्रम चलता है, साढ़े 6 से साढ़े 9 तक। अब जहां तक मेरे पास जो कागज आए हैं, उसमें है कि एफ०एम० वाले साढ़े 6 से 9 का कार्यक्रम बंबई में देते हैं। अब आपने कहा है सात दिन में, हफ्ते में इस पर मराठी प्रोग्राम कितना होता है? वह दो घन्टे दस मिनिट का होता है। तो 21 घन्टे में से दो घंटे और दस मिनिट का कार्यक्रम मुझे नहीं लगता है कि बहुत है। मैं बिल्कुल साफ कह देना चाहता हूं कि कई राज्यों की मांग आती रही है कि कोई-न-कोई चेनल उनके लिए चाहिए।

श्री ए० वी० थालवे: सभापति जी

श्री सभापति: छोटा।

श्री एन० के० पी० साल्वे : छोटा सा हो, साहब। यह एफ एम बैंड का रिसेप्शन बढ़िया है, मान लिया सबने। मैं यह जानना चाहूंगा, उन्होंने कह दिया 16 घंटे होता है दूसरे बैंड से मराठी का कार्यक्रम, क्या उन्होंने एफएम बैंड से मराठी कार्यक्रम सुना है यह कितना श्रवणीय, , कितना सुगम, कितना सरीला, कितना लयबद्ध होता है ? ...(**व्यवधान**)...

एक माननीय सदस्य : बहुत अच्छे। (**व्यवधान**)....

श्री सभापति : उन्होंने ओरिजनली सुना है बिना उसके .. (**व्यवधान**)..

श्री एन० के० पी० साल्वे : मान्यवर, प्रादेशिक कार्यक्रम .. (**व्यवधान**)..

श्री सभापति : साल्वे जी, आप प्रश्न कर लीजिए। देखिए, समय जा रहा है। ...(**व्यवधान**)..बाकी सदस्यों को पहले ही शिकायत रहती है।

श्री एन०के०पी० साल्वे : मान्यवर, यह आवश्यक है कि प्रादेशिक कार्यक्रम में जो इतने सुगम और सुन्दर कार्यक्रम होते हैं, यह राष्ट्रीय स्तर पर प्रसारित किए जायें। यह 16 घंटे का क्या मतलब होता है। इसलिए मैं उनसे पूछना चाहूंगा कि इस बैंड के ऊपर और टेलीविजन पर भी टेलिविजन में भी कुछ कार्यक्रम ऐसे आते है, मान्यवर, कि सिर्फ कानों को नहीं आखों को भी तकलीफ होती है। ...

श्री सभापति : एफ एम बैंड पर आते है ?...

श्री एन०के०पी० साल्वे : नहीं, नहीं, नहीं टेलीविजन पर आते हैं। ... (**व्यवधान**) ...

श्री सभापति : एफएम बेंड से सब वेंड, फिर उसके बाद टेलीविजन और फिर ..(**व्यवधान**)..ऐसे तो मुश्किल हो जाएगी।

श्री एन० के० पी० साल्वे : मेरा प्रश्न यह है, जो मूल प्रश्न से बिल्कुल जुड़ा हुआ है। मेरा प्रश्न यह है कि यह घटों का सवाल नहीं होना चाहिए।...

श्री शंकर दयाल सिंह : टेलीविजन के लिए दूरदर्शन शब्द प्रयोग में लायें।

श्री एन०के०पी० साल्वे : मान्यवर, यह घंटों का प्रश्न नहीं होना चाहिए। प्रादेशिक भाषाओं के जो इतने सुन्दर और श्रवणीय कार्यक्रम आते हैं, इनको राष्ट्रीय स्तर पर प्रसारित करने के लिए आप क्या कदम उठाने वाले हैं ? यह बतायें।

SHRI AJIT KUMAR PANJA: Sir, this is not really relevant to the main question. The honourable senior Member has asked it. Although the question is on transmission in the Marathi language, all the questions were asked in Hindi.

SHRI N. K. P. SALVE: If he thinks it is going to be relevant if I were to ask in Marathi, I am willing to ask him in Marathi.

SHRI AJIT KUMAR PANJA: So far as radio is concerned, we are going in for local languages, as has already been stated by my colleague through 127 stations. 23 languages, 146 dialects are transmitted daily through the local stations. In Maharashtra in the Marathi language, and in other places it is transmitted in their local languages. In the national network also in the languages recognised in the constitution—15 languages—news is being broadcast as far as possible. Therefore, all the languages, including our national language, are given priority according to the density of the population of the area.

SHRI M. A. BABY: The question relates to the duration of the programmes through frequency modulation bands. With so much of pain we understand there are so many cracks appearing in our cultural sphere. For national integration music can play a very important role. Therefore, I want to know while increasing the overall duration of the FM band, whether the Government will give sufficient emphasis on broadcasting different streams of clasical music progammes.

I understand maximum of half-an-hour programme is being given on FM band. I want to know whether the Government will consider to have classical music programmes of both Hindustani and Carnatic systems. Especially from North, you should have more Carnatic

music programmes and from South you shoud have more Hindustani music programmes. As the I&B Ministry has a scheme of showing films of great classical interest on television, you can also think of broadcasting long-duration concerts of great maestros through FM bands. I want to know whether the hon. Minister will consider these suggestions sympathetically.

SHRI AJIT KUMAR PANJA: This suggestion is well noted. In fact, in the FM channel, as at present, classical music is given first priority, second to light classical music, third to film music fourth to folk music and fifth to Western music, including classical music and pop music.

I don't want to repeat, as I have already answered the increase of time will depend upon the purchasing power of the people to buy and maintain such sets. I did not mention it in my answer to the first question. Even in the FM band radio sets, where there is no electricity, you have to run it by battery sets. Here more number of batteries are required than what is required in the ordinary sets that are now available. Therefore, even if we spread it weekly, people will not get the purchasing power to maintain the set. That care is being taken and certainly the suggestion about the long-duration classical music is noted.

श्रीलंका से निजी टी०वी० कंपनी द्वारा प्रसारण आरम्भ करना

*†384. **श्रीमती बसन्ती शर्मा :**
श्री कपिल वर्मा :

क्या सूचना और प्रसारण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार का ध्यान 2 मार्च, 1992 को यू.एन.आई. द्वारा प्रचारित उस समाचार की ओर दिलाया गया है जिसके अनुसार एक निजी कंपनी श्रीलंका से प्रसारण शुरू करने वाली है ; यदि हां, तो क्या इसका भारतीय संस्कृति और विज्ञापन आय पर बुरा प्रभाव पड़ेगा;

(ख) क्या यह सच है कि ये कार्यक्रम श्रीलंका और दक्षिण भारत में बिना डिश ऐंटिना के देखे जा सकेंगे ; और

(ग) यदि हां, तो इस पर सरकार की क्या प्रतिक्रिया है ?

सूचना और प्रसारण मंत्रालय में उपमंत्री (कुमारी गिरजा व्यास) : (क) से (ग) एक विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है ।

विवरण

सरकार को यू.एन.आई. द्वारा परिचालित दिनांकित 1 मार्च, 1992 के उक्त समाचार और कतिपय समाचार पत्रों में तत्सम्बन्धी कवरेज की जानकारी है बताया गया है कि श्रीलंका में स्थित एक निजी स्वामित्व वाले टी०वी० केन्द्र द्वारा अगस्त 1992 से प्रसारण शुरू कर दिया जाएगा । समाचार में यह संकेत दिया गया है कि यह एक पार्थिव (टेरेस्ट्रीयल) ट्रांसमीटर होगा और इसके चालू हो जाने से डिश ऐंटिना के उपयोग के बिना इसके सिगनल प्राप्त हो सकेंगे । इस ट्रांसमीटर के स्थापित किए जाने के स्थान और इसकी विकिरण शक्ति के ब्यौरे के अभाव में दक्षिण भारत के हिस्सों में प्रस्तावित ट्रांसमीटर की कवरेज की सीमा के बारे में पूर्वानुमान नहीं लगाया जा सकता । इसी प्रकार यह कहना भी संभव नहीं है कि इसके प्रसारण से दूरदर्शन के प्रसारण राजस्व अथवा भारतीय संस्कृति पर इसका कितना प्रभाव पड़ेगा ।

किन्तु दूरदर्शन ने अपनी ओर से, क्रमबद्ध रीति से तमिलनाडु के कवर न किए गए भागों में अपनी सेवा का विस्तार करने के लिए कदम उठाए हैं । तमिलनाड में लगाए जा रहे प्रस्तावित विभिन्न ट्रांसमीटर के चालू हो जाने से राज्य की लगभग 95.5 प्रतिशत जनसंख्या को दूरदर्शन कवरेज प्राप्त हो सकेगी, जबकि इस समय राज्य के 89.2 प्रतिशत लोगों को यह कवरेज प्राप्त है।

†सभा में यह प्रश्न श्रीमती बसन्ती शर्मा द्वारा पूछा गया ।